

॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥
 ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

१० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

ध्यायताभगवद्वाक्यंचेष्टितं किमतः परं ॥ बदर्याश्रममागम्य समागम्य च तावपी ॥ १० ॥ कियंतं कालमवसत्कां कथां पृष्ट्वांश्च सः ॥ इदं शतसहस्राद्विभारता
ख्यानविस्तरात् ॥ ११ ॥ आमंथ्य मतिमंथेन ज्ञानोदधिमुत्तमं ॥ नवनीतं यथा दध्ना मलयान् चंदनं यथा ॥ १२ ॥ आरण्यकं च वेदेभ्य ओषधिभ्यो मृतं यथा ॥ स
मुत्पृतमिदं ब्रह्मन्कथामृतमिदं तथा ॥ १३ ॥ तपोनिधे त्वयोक्तं हि नारायणकथाश्रयं ॥ स ईशो भगवान् देवः सर्वभूतात्मभावनः ॥ १४ ॥ अहो नारायणं तेजो दुर्द
र्शं द्विजसत्तम ॥ यत्राविशंति कल्पांते सर्वे ब्रह्मादयः सुराः ॥ १५ ॥ ऋषयश्च सगंधर्वा यच्च किंचिच्चराचरं ॥ न ततोस्ति परं मन्ये पावनं दिवि चेह च ॥ सर्वाश्रमाभिग
मनं सर्वतीर्थावगाहनं ॥ न तथा फलदं चापि नारायणकथायथा ॥ १७ ॥ सर्वथा पाविताः स्मेहश्रुत्वे मामादितः कथां ॥ हरेर्विश्वेश्वरस्येह सर्वपापप्रणाशनीं ॥ १८ ॥
न चित्रं कृतवांस्तत्र यदार्यो मेधनं जयः ॥ वासुदेवसहायो यः प्राप्तवान् जयमुत्तमं ॥ १९ ॥ न चास्य किंचिदप्राप्यं मन्ये लोकेष्वपि त्रिषु ॥ त्रैलोक्यनाथो विष्णुः स य
थासीत्सात्यकृत्स वै ॥ २० ॥ धन्याश्च सर्व एवासन् ब्रह्मं स्ते मम पूर्वजाः ॥ हिताय श्रेयसे चैव येषामासीज्जनार्दनः ॥ २१ ॥ तपसाथ सुदृश्यो हि भगवान् लोकपूजि
तः ॥ यं दृष्ट्वंतस्ते साक्षाच्छ्रीवत्सां कविभूषणं ॥ २२ ॥ तेभ्यो धन्यतरश्चैव नारदः परमेष्ठिजः ॥ न चाल्पतेजसमृषिर्वेद्यिनारदमव्ययं ॥ २३ ॥ श्वेतद्वीपं समासाद्य
येन दृष्टः स्वयं हरिः ॥ देवप्रसादानुगतं व्यक्तं तत्तस्य दर्शनं ॥ २४ ॥ यदृष्ट्वांस्तदा देवमनिरुद्धतनौ स्थितं ॥ बदरीमाश्रमं यत्तु नारदः प्राद्रवत्पुनः ॥ २५ ॥ नरनारा
यणौ द्रष्टुं किंतु तत्कारणं मुने ॥ श्वेतद्वीपान्निवृत्तश्च नारदः परमेष्ठिजः ॥ २६ ॥ बदरीमाश्रमं प्राप्य समागम्य च तावपी ॥ कियंतं कालमवसत्प्रश्नान्कान् पृष्ट्वांश्च ह
॥ २७ ॥ श्वेतद्वीपादुपावृत्ते तस्मिन्वासुमहात्मनि ॥ किमब्रूतां महात्मानो नरनारायणावपी ॥ २८ ॥ तदेतन्मे यथा तत्त्वं सर्वमाख्यातुमर्हसि ॥ वैशंपायन उवा
च ॥ नमो भगवते तस्मै व्यासायामिततेजसे ॥ २९ ॥ यस्य प्रसादाद्दृश्यामि नारायणकथामिमां ॥ प्राप्य श्वेतं महाद्वीपं दृष्ट्वा च हरिं मव्ययं ॥ ३० ॥ निवृत्तो नार
दो राजंस्तरसामेरुमागमत् ॥ हृदयेनोद्बहन् भारं यदुक्तं परमात्मना ॥ ३१ ॥ पश्चादस्याभवद्राजन्नात्मनः साध्वसं महत् ॥ यद्गत्वा दूरमध्वानं क्षेमी पुनरिहागतः
॥ ३२ ॥ मेरोः प्रचक्राम ततः पर्वतं गंधमादनं ॥ निपपात च खातूर्णं विशालां बदरीमनु ॥ ३३ ॥ ततः सदृशो देवौ पुराणावपि सत्तमौ ॥ तपश्चरंतौ सुमहदात्मनि
ष्ठौ महाव्रतौ ॥ ३४ ॥